

(नवमस्कन्धार्थ ईशानुकथालीला)

नवमस्कन्धके २४ अध्यायोंमें ईशानुकथालीलाका निरूपण किया गया है. क्योंकि अष्टम स्कन्धमें प्रतिपादित सद्धर्मद्वारा असद्वासनाओंके दग्ध हो जानेपर भगवान्के बारेमें शुद्ध वासनाके प्रकट होनेके कारण भक्ति कर्तव्यतया प्रसक्त होती है. अतः ईशानुकथारूपा भक्तिका निरूपण नवम स्कन्धमें हुवा है. इस स्कन्धमें श्रीहरिके अवतारोंका अर्थात् “श्रीहरिका और उनके अनुवर्तियोंका” (भाग.पुरा.२।१०।५) अनुचरितका वर्णन जो बताया गया है उसमें ‘हरि’पद द्वारा दुःखोंको हरनेवाले और सुखप्रदान करनेवाले भगवान् हैं इस तरह अभिप्रेत है.

प्रस्तुत स्कन्धार्थके विचारवश ईशानुकथाके २४ अध्यायोंका हेतुरूप सन्दर्भ यों है : इस स्कन्धमें प्रमुखतया दो ^१दुःखनिवारणकी लीला और ^२सुखप्रापणकी लीला के निरूपणार्थ दो प्रकरण योजित हुवे हैं.

प्रकृतिके तिगुने तीन गुण अर्थात् नौ गुणोंके प्रभेदवश दुःख नौ तरहके प्रकट होते हैं. और अपने अनुगामियोंके दुःख जो भगवान्ने दूर किये वे भक्त भी, अतएव, नौ तरहके प्रतिपादित हुवे हैं. ईशके ये सभी अनुगामी एक भगवद्विषयक ज्ञान, जो अविद्या रूपी नवविध दुःखोंका वारक बन जाता है, उससे मण्डित होते हैं. इसके अलावा इनके चरित्र भी कर्म ज्ञान और भक्ति के प्रभेदवश तीन तरहके प्रकट हुवे हैं. अतः प्रथम प्रकरणतया ९ प्रकारके (भक्तोंके दुःख) + १ एक (दुःखनिवारक ज्ञान) + ३ प्रकारके (कर्मज्ञानभक्त्यात्मक चरित्र) = १३ अर्थात् तेरह अध्यायोंमें दुःखनिवारणका प्रकरण विवक्षित है.

इसी तरह श्रीहरिकी सुखप्रापणकी लीलाके निरूपणार्थ दस अध्याय हैं. क्योंकि जिन इन्द्रियोंसे सुखकी अनुभूति होती है, वे पांच कर्मेन्द्रिय और पांच ज्ञानेन्द्रिय यों कुल दस प्रकारकी होती हैं. उन सुखोंके अनुभवकर्ता भक्त भी अतः दशविध होते हैं. इन सुखोंको प्रदान करनेवाले एक भगवान् यों “१०+१=११” कुल मिला कर ग्यारह अध्यायोंका द्वितीय प्रकरण योजित हुवा है.

(प्रकरणार्थ)

इन दोनों प्रकरणोंको कार्यरूपा लीलाकी दृष्टिसे निहारनेपर प्रथम प्रकरण सूर्यवंशके भक्तोंके वर्णनार्थ है तथा दूसरा प्रकरण चन्द्रवंशके भक्तोंके वर्णनार्थ है. सूर्यवंशमें भगवान्का प्रादुर्भाव बारह प्रकारसे हुवा. सूर्यवंशके बीजरूप सूर्यको भी द्वादश प्रकारका माना गया होनेके कारण प्रथम प्रकरण बारह अध्यायोंका योजित हुवा है. चन्द्रवंश भी सूर्यवंशकी तुलनामें कुछ जघन्य नहीं होता यह दिखलानेको उस वंशका वर्णन भी बारह अध्यायोंमें ही किया गया है. नवम स्कन्धके प्रथम अध्यायमें चन्द्रवंशके बीजरूप पुरुरवाका वर्णन मिलता होनेसे यह अध्याय मुख्यतया चन्द्रवंशके वर्णनार्थ स्वीकारना हो तो एक यह प्रथम अध्याय और १४वें अध्यायसे प्रारंभ कर अन्तिम २४वें अध्याय तक जो ११ अध्याय होते हैं उन्हें जोड़नेपर बारह अध्यायोंका योग भी बन सकता है. अथवा सूर्यवंशके वर्णनार्थ तेरह अध्याय और चन्द्रवंशके वर्णनार्थ ग्यारह अध्याय, यों भी चौबीस अध्यायोंकी संगति सोची जा सकती है.

(ईशानुकथाके अन्तर्गत १-१३ अध्यायोंवाला दुःखनिवारक श्रीहरिकी लीलाके साथ सूर्यवंशके
वर्णनपरक प्रथम प्रकरण)

तदन्तर्गत ईशानुकथाके अवान्तर प्रकरणके अध्याय १-९ :

- (१) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत आद्य प्रकरणके प्रथम अध्यायमें आदिम कोटिके प्रजारहित मनुकी पत्नी श्रद्धाके गर्भसे पुत्रकी जगह 'इला' नामिका पुत्री जो जनमी उसे भगवान्‌के वरदानतया 'सुद्युम्न' नामक पुत्रकी प्राप्ति हुयी वह ब्रह्मा विष्णु और रुद्र के द्वारा केवल पुरुषरूप न रह कर स्त्री-पुरुष उभयरूप परम भक्त बना उसकी कथाका निरूपण हुवा है.
- (२) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत आद्य प्रकरणके द्वितीय अध्यायमें आदिमकोटिके पृषध्र आदि सात मनुके पुत्रोंके वंशचरित्रके निरूपणमें भगवान्‌के ऐश्वर्यादि छह गुणधर्म और सातवें उन गुणधर्मोंवाले स्वयं भगवान्‌ के स्वरूपके अनुरूप तथा अलम्बुषा देवीके भजनका निरूपणद्वारा देवरूप भक्तोंका निरूपण किया गया है.
- (३) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत आद्य प्रकरणके तृतीय अध्यायमें आदिमकोटिके शर्याति और अंगीरस के सत्रमें दूसरे दिनके कर्मके प्रवक्ताके रूपमें स्वतः यज्ञके प्रवर्तक होनेसे यज्ञप्रवर्तक च्यवन आदि ऋषियोंके द्वारा इन्द्रकी भुजाओंके स्तम्भनका वृत्तान्त और लुप्त हुवे आश्विन ग्रहका पुनः प्रवर्तनका भी वृत्तान्त 'सुकन्या' नामिका पुत्रीके दान आदिद्वारा सभी कामनाओंकी पूर्तिका वृत्तान्त साथ ही साथ ब्रह्माजीके वचनके अनुरोधवश उस वंशमें जनम लेनेवाली 'रेवती' नामिका कन्याका दान द्वापरयुगमें यदुवंशमें अवर्तीण होनेवाले श्रीबलरामको जो किया गया वह देवके पोषक भक्तोंका चरित्र वर्णित हुवा है.
- (४) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत आद्य प्रकरणके चतुर्थ अध्यायमें मध्यमकोटिके निरूपणार्थ 'नाभाग' नामक राजाने, मन्त्रदृष्टा और सत्यपरायण होनेके कारण, महादेवजीको परितुष्ट किया और इसके कारण वह उनके समान भक्त हुवा, ऐसा निरूपण किया गया है. और नाभागके पुत्र महाभागवत राजा अम्बरीषका भगवान्‌से अतिरिक्त सर्वत्र विरक्त होना तथा सर्वात्मभावपूर्वक सर्वेन्द्रियोंसे भगवद्‌भजनमें अनुरक्त होना साथ ही साथ ऐसे भक्तकी भक्तिके अनुभावको प्रकट करनेको ब्राह्मण द्वारा दिये गये कायिक शापका भी वहां प्रभावहीन हो जाना तथा भगवान्‌की भी भक्तवश्यता प्रकट करनेको ऐसे भक्तके प्रति किये अपराध करनेवालेको भगवान्‌द्वारा भी स्वयं क्षमा कर रक्षण नहीं करना एतावता भगवत्समान भक्त होनेका निरूपण किया गया है. साथ ही साथ यहां भक्तोंके बन्ध और मोक्ष की व्यवस्थाकी विलक्षणताकी कथा अर्थात् मध्यमकोटिके अन्तर्गत महाभागवत राजा अम्बरीषके भक्तिमय बन्ध अर्थात् गृहस्थितिका वृत्तान्त निरूपित हुवा है.
- (५) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत आद्य प्रकरणके प्रथम अध्यायमें मध्यमकोटिके भक्तकी कथाके सन्दर्भमें जब दुर्वासा ऋषिने राजा अम्बरीषके चरण पकड़ लिये तब राजाका लज्जित हो कर स्वयं दुर्वासा ऋषिके चरणोंको पकड़ कर अपनी ब्रह्मण्यता प्रकट कर सुदर्शनचक्रकी स्तुतिके निरूपणमें भी राजाका सर्वथा गर्वरहित होना दिखलाया गया है. जिसकी रक्षा करने भगवान्‌ने अपनी असमर्थता प्रकट की उसकी रक्षा कर पानेका गर्वरहित सामर्थ्य यहां निरूपित हुवा है. एतावता भक्तिके लिये सर्वप्रथम भगवान्‌ नहीं प्रत्युत भक्त ही मृग्य होता है अतः ब्रह्मभावकी तुलनामें भक्तिकी श्रेष्ठताका निरूपण अभिप्रेत है. साथ ही साथ राजा अम्बरीषके बन्ध-मुक्तिकी व्यवस्था क्या-कैसी थी यह समझानेको राजाके गृहत्यागका भी वर्णन इस अध्यायमें किया गया है.

(६) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत आद्य प्रकरणके छठे अध्यायमें मध्यमकोटिके महाराज इक्ष्वाकुकी कथामें पिताद्वारा आज्ञप्त पुत्र विकुक्षिका वनमें श्राद्धसम्पदानार्थ खरगोशके शिकारको जाना और उस श्राद्धानुष्ठानसे पूर्व ही उस मांसका भूखके कारण भक्षण कर लेनेके कारण पिताद्वारा पुत्रत्याग तथा अन्तमें संसारनिरपेक्षतया शरीरत्याग द्वारा कर्मापेक्षया भी श्रेष्ठतर भक्तिद्वारा भगवान्को प्राप्त कर लेनेकी कथा; और, ऐसे पिताके बाद 'शशाद' नाम्ना विकुक्षिके सिंहासनारूढ़ होनेपर श्रीहरिके याजनमें परायण होनेकी कथा, शशादके 'पुरंजय' - 'इन्द्रवाह' - 'ककुत्स्थ' यों तीन नामवाले पुत्रकी भगवान् श्रीहरिके तेजसे सम्पन्न तथा देव-दानवयुद्धमें देवोंके सहायक बननेकी कथा, उसके पुत्र कुवलयश्वकी अतिदुःसह पुत्रकी मृत्युसे भी विचलित हुवे बिना ऋषियोंके कार्य सिद्ध करनेकी कथा, उसके वंशमें युवनाश्वकी पत्नीके ब्रध्या होनेके कारण ऋषियोंने पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया परन्तु उस पुत्रेष्टिमें मंत्राभिषिक्त पुंसवनार्थ जलका पान राजाकी रानियोंके बजाय स्वयं राजाने अतिपिपासाकुल हो कर लिया परिणामतः उसकी कुक्षि फाड़ कर गर्भगत शिशुके जनमनेकी ऋषिओं और देवताओं के अनुग्रहकी कथा, युवनाश्वके पुत्र, भगवान् अच्युतके तेजोधामसे सम्पन्न, मान्धाताके पृथ्वीपर चक्रवर्ती सम्राट् होने की कथा द्वारा ब्रह्मसमान भक्तोंकी कथा वर्णित हुयी है।

(७) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत आद्य प्रकरणके सातवें अध्यायमें उत्तमकोटिके निरूपणार्थ इसी वंशमें सत्यव्रतके पुत्र त्रिशंकु जो अपने गुरुके शापवश दोषवश चाण्डाल बने उसके पुत्र राजा हरिश्चन्द्रद्वारा मुक्त हुवे, यों राजा हरिश्चन्द्रकी भगवद्भक्ति स्वपर उभयकी उद्धारिका दिखलायी गयी है। इन्हें लोकापवादके शमनार्थ तथा देवर्षिपितृ-ऋणकी निवृत्तिके लिये वरुणको प्रार्थना कर प्राप्त हुवे पुत्रकी मृत्युके लिये राजी हो जानेपर भी भगवान्ने उसके पुत्रकी रक्षा करके अपनी कृपा प्रकट दिखायी धर्मकी परीक्षाके हेतु चाण्डाल होनेकी दशामें भी अपने स्वामीके कार्यार्थ अतिसाहसपूर्वक धैर्य धारण कर अपनी सत्यनिष्ठासे विश्वामित्रको प्रसन्न करनेवाले धैर्यपूर्वक लोकोद्धारार्थ प्रयत्नशील भक्तका इस अध्यायमें निरूपण हुवा है।

(८) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत आद्य प्रकरणके आठवें अध्यायमें उत्तमकोटिके निरूपणार्थ इसी वंशमें जनमे सगर राजाने मर्यादाविरोधी तालजंघका वध किया और उनके पुत्रोंने सागरके निर्माणद्वारा मर्यादाकी रक्षा की जानेके कारण कर्म ज्ञान आदि द्वारा उनके महत्ताका ख्यापन भी किया गया है स्थिर रहनेवाले कार्योंके कर्ता होनेके रूपमें लोकोद्धारका प्रयत्न करनेवाले भक्तोंके चरित्रका यहां प्रतिपादन किया गया है।

(९) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत आद्य प्रकरणके नौवें अध्यायमें उत्तमकोटिके निरूपणार्थ इसी वंशमें प्रकट होनेवाले महाराज भगीरथके सर्वलोकोद्धारार्थ भूमिपर जगत्पावनी गंगाके अवतरणार्थ तप करना, उनके ही वंशमें जनमनेवाले राजा सौदासकी गुरुशापवश पहले राक्षस बन जाना और उस रूपमें पुनः श्रुताध्ययनतपआदि निरत ब्राह्मणका भक्षण करनेसे ब्राह्मणपत्नीके शापवश पत्नीसंगमसे निवृत्त हो जानेके कारण राजपत्नी मदयन्तीके ही बच जानेसे राजगुरु वशिष्ठद्वारा नियोग द्वारा ब्रह्मबीजसे वंशके अनुवृत्त रहनेकी कथामें भक्तिकी प्रमुखता तथा ज्ञानयुक्तता के निरूपणके कारण राजा खट्वांगमें दोनों ही फलित हो जानेसे क्षणभरको भी श्रीकृष्णकी स्मृतिके कारण अनपायिनी मुक्तिके प्राप्त होनेकी कथाके आधारपर भक्तिमार्गके बारेमें परमकाष्ठापन्न लोकोद्धारके प्रयत्नमें परायण भक्तोंका निरूपण इस अध्यायमें हुवा है।

तदन्तर्गत ईशकथाके अवान्तर प्रकरणके अध्याय १०-१३ :

(१०) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत आद्य प्रकरणके दसवें अध्यायमें ईशानुगामिओंकी कथाके बाद ईशकथाको प्रस्तुत करने ईशके माहात्म्यके ज्ञापक वीर्यप्रकाशक श्रीरामावतारचरित्रका निरूपण करते हुवे ईशकी क्रियाशक्तिका निरूपण इस अध्यायमें किया गया है.

(११) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत आद्य प्रकरणके ग्यारहवें अध्यायमें ईशकथाके सन्दर्भमें इसी सूर्यवंशमें ईशावतार लेनेवाले भगवान् श्रीरामचन्द्र सर्वदेवमय देवाधिदेवके यजनमें सर्वस्वदानके द्वारा वैदिक ब्राह्मणोंमें प्रीतिका सम्पादन किया इसी तरह लोकापवादके निरसनार्थ लौकिकधर्मोंका अंगीकार लौकिक जनोंके हृदयमें भी प्रीतिका सम्पादन किया, इसी तरह सुग्रीव-हनुमान आदि वानरोंके साथ सख्य-स्वामिभाव निभा कर अपनी सुकृतज्ञताके ज्ञापनद्वारा मानवेर योनिमें जनमनेवाले पशु-पक्षिओंमें भी अपनी प्रीतिका सम्पादन किया. सारे कौशलके उद्धारद्वारा अपना अलौकिक माहात्म्य भी प्रकट किया. इसी तरह अपने सभी भाईओंके हितसौख्यका सम्पादन करनेवाले भगवान् श्रीरामने अपना लौकिक माहात्म्य भी प्रकट करनेके कारण इस अध्यायमें भक्तिकी निष्ठाका निरूपण किया गया है.

(१२) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत आद्य प्रकरणके बारहवें अध्यायमें ईशकथाके निरूपणार्थ इसी वंशमें अवतीर्ण होनेवाले ईशकी ज्ञानशक्तिका निरूपण वंशविस्तारके निरूपणद्वारा किया गया है.

(१३) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत आद्य प्रकरणके तेरहवें अध्यायमें ईशकथाके प्रसंगमें ज्ञानमिश्रभक्तिकी प्रमुखताके निरूपणार्थ राजा निमिको गुरुके शापकी कथाद्वारा गुरुमें ज्ञानकी प्रमुखता बोधित की गयी है. गुरुको राजा निमिके प्रतिशापके कारण राजा निमिमें भक्तिकी प्रमुखता बोधित की गयी है. इसी तरह आगे भी चल कर उसके वंशमें ऐसे जनमेंगे ऐसे निरूपण द्वारा ज्ञाननिष्ठभक्तके चरित्रकी कथा इस अध्यायमें हुयी है.

(ईशानुकथाके अन्तर्गत १४-२४ अध्यायोंवाला सुखप्रापक श्रीहरिकी लीलाके साथ चन्द्रवंशके वर्णनपरक द्वितीय प्रकरण)

(१४) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत द्वितीय प्रकरणके प्रथम अर्थात् आदिसे १४वें अध्यायमें आदिमकोटिके भक्तके चरित्रके सन्दर्भमें ब्रह्माजीके पुत्र अत्रि ऋषिके ज्ञानेन्द्रिय रूप नेत्रोंमेंसे जनमे सोमके पुत्र बुध, ज्ञानांश तथा यज्ञरूप होनेके कारण शुद्ध हैं. वैसे लोकदृष्टिसे बुध जारजात हैं तोभी सर्वदेवोंकी सम्मतिके कारण तथा देवताओंके गुरु बृहस्पति की स्पृहावश निर्दोष विष्णुबुद्धिका अनुभाव जतानेके कारण बृहस्पतिकी पत्नी ताराके भीतर लक्ष्मीका आवेश तब था और सोमके भीतर भगवान् विष्णुका आवेश हुवा था. इसीलिये ऐसे बुध और इला की सन्तती होनेके कारण पुरुरवा ऐल, वैसे लोकदृष्ट्या 'उर्वशी' अप्सरा अतीव आसक्त था, परन्तु नारायणसे उत्पन्न होनेवाली उर्वशी मित्रावरुणोंके शापवश भूलोकमें प्रकट होनेवाली ही थी फिरभी देवोंमें प्रकट होनेवाली भोगसहित भक्ति नहीं प्रत्युत भूलोकमें प्रकट होनी आवश्यक ऐसी मूर्तिमती भोगरहित भक्तिरूपा थी. उसमें अत्यधिक समासक्त होनेके कारण पुरुरवा ऐलसे वेदत्रयी और अग्नित्रयी भूतलपर प्रकट हुयी थी. अतएव ऐसी उर्वशीमें आसक्त होनेके कारण पुरुरवा ऐलको मुक्तिलाभ मिला था. यह भक्तिके ऐसे अनुभावयुक्त भक्तका चरित्र इस अध्यायमें निरूपित हुवा है.

(१५) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत द्वितीय प्रकरणके द्वितीय अर्थात् आदिसे १५वें अध्यायमें ईशावतारकथाको प्रस्तुत करनेको ऋचिक ऋषिके द्वारा तैयार किये गये चरुओंके उलटे-पुलटे उपभोग अर्थात्

हविर्नाशके वश भगवदावेशावतार परशुरामद्वारा, क्षत्रियोंमें त्रेतायुगके अनुरूप प्रकटे दोषपूर्ण त्रिगुणोंके सप्तगुणित (अर्थात् $3 \times 7 = 21$) विनाशकी कथाका सूत्रपातरूपी चरित्र इस अध्यायमें वर्णित हुआ है.

(१६)सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत द्वितीय प्रकरणके तृतीय अर्थात् आदिसे १६वें अध्यायमें ईशावतारकथाको प्रस्तुत करनेको मन्त्रनाशके वश पूर्वोक्त सदोष त्रिगुणोंके सप्तधा विनाशकी कथा इस अध्यायमें अनुवृत्त हो रही है.

(१७)सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत द्वितीय प्रकरणके चतुर्थ अर्थात् आदिसे १७वें अध्यायमें सोमवंशके आदिमकोटिके भक्तोंकी कथाको प्रस्तुत करने अवैदिक त्रिगुणोंके तो रामावतारके समय निवारण किये जानेके कारण जो गुण उर्वरित हुवे वे तो वैदिक थे अतः निर्गुण थे अतः धन्वन्तरिके जन्मकेद्वारा उनकी शुद्धता जतायी गयी अतएव अलर्कके भोगयुक्त होनेपर भी मोक्षप्राप्तिमें कोई बाधा नहीं आयी. रजि तो दैत्योंको भी जीतनेवाला देवताओंके कार्यका साधक था परन्तु रजिके पुत्र सब तरहसे समर्थ होनेपर भी वेदबाह्य मानसिकता वाले थे अतः इन्द्रद्वारा उनके वधकी कथा भोगयुक्त वैदिक भक्तोंके निरूपणार्थ इस अध्यायमें योजित हुयी है.

(१८)सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत द्वितीय प्रकरणके पंचम अर्थात् आदिसे १८वें अध्यायमें सोमवंशके मध्यमकोटिके भक्तोंकी कथाको प्रस्तुत करनेको पुष्टिभक्तोंमें जो श्रेष्ठ हो उसे सभी बातोंमें प्रमाणभूत शुद्ध अन्तःकरणकी वृत्ति तथा पित्राज्ञापरायणता होती है. अतः ऐसे भक्तोंकी बन्धमोक्षव्यवस्था समझानेको ययातिके लिये बन्धरूप गृहस्थितिका निरूपण इस अध्यायमें किया गया है.

(१९)सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत द्वितीय प्रकरणके छठे अर्थात् आदिसे १९वें अध्यायमें सोमवंशके मध्यमकोटिके भक्तोंकी कथाको प्रस्तुत करनेको मध्यमोंमें मध्यम ऐसे ययातिको जब वैराग्य हुआ तब उसने मोक्षरूप गृहत्याग उसका ही निरूपण इस अध्यायमें किया गया है.

(२०)सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत द्वितीय प्रकरणके सातवें अर्थात् आदिसे २०वें अध्यायमें सोमवंशके उत्तमकोटिके भक्तोंकी कथाको प्रस्तुत करनेको दुष्यन्तके पुत्र भरतकी कथा अतिसामर्थ्यवाले भक्तकी कथाके रूपमें इस अध्यायमें निरूपित हुयी है.

(२१)सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत द्वितीय प्रकरणके आठवें अर्थात् आदिसे २१वें अध्यायमें सोमवंशके उत्तमकोटिके भक्तोंकी कथाको प्रस्तुत करने रन्तिदेव आदिकी कथा अतिधैर्यवाले भक्तकी कथाके रूपमें इस अध्यायमें वर्णित हुयी है.

(२२)सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत द्वितीय प्रकरणके नौवें अर्थात् आदिसे २२वें अध्यायमें सोमवंशके उत्तमकोटिके भक्तोंकी कथाके अन्तर्गत अन्तमें यदुवंशकी तालिका दिखलायी गयी है. यों यहां सामर्थ्य और धैर्य दोनोंसे युक्त भक्तोंकी कथा इस अध्यायमें निरूपित हुयी है.

(२३)सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत द्वितीय प्रकरणके दसवें अर्थात् आदिसे २३वें अध्यायमें सोमवंशके उत्तमकोटिके भक्तोंकी कथाको प्रस्तुत करने यदुवंशकी कथाको और आगे बढ़ाते हुवे परमकाष्ठापन्न भक्तिवाले भक्तोंकी कथा इस अध्यायमें वर्णित हुयी है.

(२४) सूर्य और सोम के वंशोंके द्विविध प्रकरणोंके अन्तर्गत द्वितीय प्रकरणके ग्यारहवें अर्थात् आदिसे २४वें अध्यायमें सोमवंशके उत्तमकोटिके भक्तोंकी कथाको प्रस्तुत करने ऐसे भक्तिमान् कुलमें उनकी भक्तिके फलस्वरूप भगवत्प्रादुर्भावका प्रसंग प्रस्तुत किया गया है.

भागवतार्थनिबन्धगत प्रकरण – अध्यायार्थ ।

गोकुलराय-घनश्यामजी-रचित-ग्रन्थबोधार्थ ॥

हिन्दीभाषामें रचा एककाय सरलार्थ ।

श्याममनोहरकी कृति निजमतिके शोधार्थ ॥

††††††††††††††